ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(10): 1103-1105
www.allresearchjournal.com
Received: 16-07-2015
Accepted: 20-08-2015

डॉ. शशिकिरण सिंह
प्रवक्ता–हिन्दी, एन0 ए0 के0 पी0 पी0 जी0, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. शशिकिरण सिंह
प्रवक्ता–हिन्दी, एन0 ए0 के0 पी0 पी0 जी0, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

कृष्ण–काव्यः डॉ. माधवीलता शुक्ला

डॉ. शशिकिरण सिंह

प्रस्तावना

हिन्दी–साहित्य के अन्तर्गत कृष्ण काव्य के आदि कवि के रूप में विद्यापति का नाम लिया जाता है, जिनकी 'पदावली' 'कृष्णकाव्य' का श्रेष्ठ उदाहरण है। विद्यापति की पदावली पर संस्कृत के कवि जयदेव'गीतगोविन्द' का विशेष प्रभाव है। साहित्य में कृष्ण भक्ति की धारा को प्रवाहित करने का श्रेय 'श्रीमद् भागवत' को है, जिसका दशम स्कन्ध भगवान श्री कृष्ण की लीलाओं और उनके जीवन में भक्तों और कवियों की असीम अनुरक्ति को जाग्रत करने वाला है। विद्यापति के पश्चात साहित्य में श्री कृष्ण–काव्य–धारा को चिरस्थाई बनानें का श्रेय भक्तवर सूरदास को जाता है। सूरदास जी के उपरान्त हिन्दी साहित्य में कृष्ण काव्य की एक सुदीर्घ परम्परा प्राप्त होती है। अष्टछाप के अन्य कवियों में सूर के पश्चात नन्ददास श्रेष्ठ हैं जिनका 'रास पंचाध्यायी' तथा 'भँवरगीत' श्रेष्ठ रचनायें हैं।

अष्टछाप के इन कवियों के उपरान्त कृष्ण काव्य धारा में मीराबाई का विशेष महत्व है जिन्होनें दाम्पत्य भाव से कृष्ण की भक्ति की । उनके पद कृष्ण भक्ति के रस में डूबे एक सच्चे भक्त के हृदय के मार्मिक उद्गार हैं। इस काल के अन्य कृष्ण भक्त कवियों में नरोत्तमदास, हरिराय, गोविन्द दास, स्वामी हरिदास तथा हित हरिवंश हैं।

तदंन्तर कृष्ण – काव्य धारा के अन्तर्गत क्रमशः श्री भट्ट, व्यासजी, निपट निरंजन, लक्ष्मी नरायण, बलभद्र मिश्र, कादिर मुबारक, रसखान आदि आतें हैं जिनमें रसखान प्रसिद्व हैं। इनके 'प्रेम वाटिका' तथा 'सुजान रसखान'में कृष्ण भक्ति मानों साकार हो उठी है। रहीम, बीरवल, टोडरमल की गणना भी भक्तिकाल के श्रेष्ठ कृष्ण–भक्त कवियों में की जाती है।

रीतिकाल में आकर कृष्ण–काव्य धारा भक्ति के पावन क्षेत्र से निकलकर श्रृंगार की भौतिक भूमि पर प्रतिष्ठित हुई किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि भक्ति भावना से यह शून्य हो गयी हो। इस युग में भी ग्वालकवि, घनानन्द, नागरीदास आदि अनेक कवियों ने श्रेष्ठ कृष्ण काव्य का सृजन किया।

आधुनिक युग में भी प्रभूतमात्रा में कृष्ण–काव्य का सृजन हुआ है। भारतेन्दु हरिशचन्द्र, सत्यनारायण 'कविरत्न', जगन्नाथदास 'रत्नाकर', अयोध्या सिंह उपाध्याय, वियोगी हरि, मैथिलीशरण गुप्त आदि ने कृष्ण–काव्य धारा को साहित्य में आगे बढाया है।

कृष्ण–काव्य धारा की इसी गौरवमयी भक्ति परम्परा में डॉ0 माधवीलता शुक्ला का नाम आता है। कृष्ण–काव्य धारा के श्रेष्ठ साहित्य सृजन में इनका अनुपम योगदान है। सर्वप्रथम अवधी भाषा में 'भगवद् गीता' का अनुवाद इनकी कृष्ण भक्ति का श्रेष्ठ उदाहरण है। अनुवाद होते हुए भी 'माधव–गीता' नाम की इस कृति के अध्ययन से वही आनन्द प्राप्त होता है जो किसी मौलिक ग्रंथ से प्राप्त होता है जिसका कारण कवयित्री के भाव–संसार की उत्कृष्टता है। कवयित्री द्वारा रचित 'माधव गीता', 'श्री राधे', छम छम बाजै पैजनी', प्रणव–प्रिया'आदि कृष्ण भक्ति के अनूठे ग्रन्थ–रत्नों ने साहित्य में कृष्ण–काव्य धारा की परम्परा में भक्ति के नये आयाम स्थापित किये हैं। इन ग्रन्थों में कृष्ण के जीवन और उनकी लीलाओं की बहुरंगी आभा से झिलमिलाती भक्ति की वह सूर –सारिता प्रवाहित है जो पाठक के हृदय को रस–सिक्त करने में सक्षम है। माधवी जी के कृष्ण काव्य धारा के इन श्रेष्ठ ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है –

माधव– माधवी : डा माधवीलता शुक्ला की यह अनुपम काव्यकृति सूर और मीरा की परम्परा की अगली कडी है। वैष्णव भक्ति की विशेषताओं से युक्त इस काव्य–ग्रन्थ में दास्य, सख्य, मधुरा व वात्सल्य भक्ति के उदाहरण देखे जा सकते हैं:

दास्य–माधव! तुम राजा हम चेरी।

भोर भयें नित आंगन बुहारू करि तुलसी की फेरी।।
भैरवि गाऊँ तुमहिं जगाऊँ, रहहुँ चरण तल हेरी।।

सख्य–माधव! चलहु चलहि बृज खोरी।

द्वार–द्वारपर धूम मचावहिं, खोजहिं नवल किशोरी।।
बहुती ग्वालिन जात दीख हम, दहि मटकी भरि कोरी।।
सखियन धेरि खवइहौं माखन,साख गिरहि नहीं तोरी।।
जो ग्वालिन उरझै हरि तोसो, डारहूँ बॉह मरोरी।।
'माधवि' यहि विधि ग्वाल–बाल सब लीन्ह श्याम संग जोरी।।

वात्सल्य–माधव मोहत मन सबहि को।

घुटुवन चलत भरत किलकारी,जागो भाग्य महि को।।
मुख माखन लपिटाय खडें हरि, मटुका पकरि दही को।।
टुनकत रूनझुन बजत पैजनी, लूटत ज्ञान सुधी को।।

माधुर्य भाव– माधव! माधव–माधव गाऊँ।

गाय बजाय छमा छम नाचूँ, निशि दिन तोहि रिझाऊँ।।
तुम्हरे नाम रूप गुण रंजित, शत शत चित्र बनाऊँ।।
पल छिन जपहिं नाम मन मेरो, तुम बिन रहि न सकाऊँ।।
मूँदत खोलत झपकत अखियॉ, दरस तिहॉरो पाऊँ।।
नित उठि चरन परवारि नयन, जल दिव्य परस सुख पाऊँ।।
'माधवि' हवै मुरली अधरन की, तुम्हरे हृदय समाऊँ।।

'माधव–माधवी' कवयित्री की कृष्ण–भक्ति से रंजित रसमय कृति है जिसमें कही भगवान से सीधें आत्म निवेदन है तो कहीं उनके रूप की मनोहर झॉकी है, कहीं भगवान कृष्ण की बाल–सुलभ चेष्टाओं का सुन्दर वर्णन है तो कहीं उनके किशोर–जीवन की लीलाओं का जीवन्त चित्रण है।
बृज की बाल और किशोर लीलाओं से लेकर कृष्ण के मथुरा–गमन और वहॉ से गोपियों को निर्गुण ब्रम्ह का ज्ञान–कराने हेतु उध्दव को गोकुल भेजनें और उध्दव के निर्गुण से सगुण ब्रम्ह का उपासक बनाने तथा ज्ञान पर भक्ति की विजय की कथा को इस संक्षिप्त कृति में समेटना डॉ0 माधवी लता शुक्ला की लेखनी का चमत्कार है। प्रेम के संयोग और वियोग दोनो पक्षों की सुन्दर व भावपूर्ण व्यंजना इस कृति में की गयी है। संयोग श्रृंगार की यह सुन्दर अभिव्यजना देखिये जहॉ मानिनी राधा को मनानें के लिए कृष्ण विविध चेष्टायें कर रहे है।

माधव मानिनी आजु मनावत।
चरन पकरि बैठे रस कुंजहि, नैनन नीर चढावत।।
धोय नयन–जल, रचत महावर, पुनि पैजनिं पहिरावत।।
जोरत हाथ करत विनती प्रभू, पुनि पुनि अंग लगावत।।
भूली मान हॅसी जब राधे, 'माधवी' मन सुख पावत।।

मिलन के अनेक सुन्दर दृष्यों की योजना–मान लीला दधिलीला, गोदना प्रसंग झूला प्रसंग आदि में की गयी है जिसका श्रृंगार रस की दृष्टि से अत्यन्त महत्व है।
कवयित्री के आत्मनिवेदन के पदों में तथा कृष्ण के मथुरा जाते समय व उसके बाद के पदों में वियोग श्रृंगार की व्यंजना अत्यन्त मार्मिक बन पडी हैः

माधव! तुम बिन प्राण न रहि हैं।
तुम नहिं बूझी पीर हृदय की विवश प्राण मुरझइ हैं।।
तिल तिल होमि देह विरहागिनि, विरही मन जरि जइ हैं।।
माधवि' पंख बॉधु चरनन ते, ढील पाय उडि जइ हैं।।

तथा

माधव चलन लगे जब बृज ते।
हा हा खाय गिरी सब सखियॉ, मूर्छित लिपटि धरनि ते।
राधे श्याम श्याम कहि बेसुध, लिपटि रही चरनन ते।

श्री राधे–कृष्ण की प्राण–वल्लभा, रस रासेश्वरी, भगवान की आहलादिनी शक्ति श्री राधा का वह पावन अश्रु–स्नात रूप इस काव्य में वर्णित है जो प्रियतम कृष्ण के मथुरा गमन के पश्चात विरह–सागर मे डूबे बृजवासियों के अतिशय दुख को भुलाने के लिए कृष्ण का रूप धारण कर उनके हृदय को धीरज बंधाने का हर सम्भव प्रयत्न करती है। सबके प्राणों की रक्षा हेतु वे अपने दुख को भुलाकर कृष्ण का रूप धारण कर बृज की गलियों मे कृष्ण के समान लीलायें करते हुए बृज बनिताओं, गोप–ग्वालों, नन्द–यशोदा को कृष्ण–विरह की प्राणान्तक पीडा से मुक्त करने का प्रयत्न करती हैं। वे कृष्ण बनकर कृष्ण के विरह में कृष्ण–मिलन का आनन्द प्रदान करने का प्रयास करती है :

राधे बृज बनी कृष्ण समाई।
जब ते श्याम गये सखि मथुरा, अवश बनी यदुराई।।
सबको दुख अपनों करि जानै, बॉटहिं बृज शीतलाई।।

अथवा

राधे! हिय सो परम उदार।
तरपत देखि सकल बृजवासिन, भूली दुख अपार।।
ऑसू पोंछि सकल नयनन, रचहि नयन जलधार।।

यह काव्यकृति राधा कृष्ण के प्रेम को उपजीव्य बनाकर लिखी गयी है। कवयित्री राधा की कृपा प्राप्त कर कृष्ण को पाना चाहती है। राधा के विरह–वर्णन में कवयित्री की तन्मयता को देखकर लगता है कि उनकी आत्मा ने राधा के साथ पूर्ण तादात्म्य स्थापित कर लिया है और राधा के ब्याज से अपने हृदय की विरह–पीडा को ही अभिव्यक्ति दी है। उनकी तन्मयता को देखकर कहना पडता है कि –

'अनुखन माधव–माधव सुमिरइत, सुन्दरि भेल मधाई'

राधा के समान ही माधवी जी भी राधा–राधा का स्मरण करते मानों स्वयं राधा हो गई हैं। यह कृति राधा–कृष्ण के मिलन–विरह, उध्दव का बृज आगमन व उनके ज्ञान–गर्व का हनन आदि पूर्व वर्णित प्रसंगों से सुसज्जित है।
उध्दव के ज्ञान पर गोपियों की कृष्ण–भक्ति का आश्चर्य जनक प्रभाव दर्शनीय है –

उध्दव कदम खडे लपिटानें।
पात–पात पे श्याम लिखों लखि, अपनों ब्रह्म भुलानें ।।

तथा

उध्दव परम परम गति पाई।
गलिन गलिन बौराये डोलहिं, खोजत कृष्ण कन्हाई।।

छम–छम बाजहिं पैजनी : श्रीकृष्ण की भक्ति में निज सुधि को विस्मृत कर नित्य–लीला में विचरण करने वाली कवयित्री को सर्वत्र प्रभु की पैजनी का मधुर स्वर गुंजायमान होता सुनाई देता है। निर्गुण ब्रहम के सगुण रूप की सर्वव्यापकता को अभिव्यंजित करती यह रचना परमात्मा के अनेकानेक रूपों के दर्शन कराती है।

प्रणव–प्रिया : इस कृति में भगवान कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म मानकर कवयित्री ने आत्मनिवेदन किया है– कृष्ण को निर्गुण निराकार ब्रहम की सगुण–साकार अभिव्यक्त मानकर माधुर्य भाव से उपासना की है।

माधवी दोहावली : इस ग्रन्थ में कृष्ण भक्ति के दोहे संकलित है। माधवी जी के इन सभी ग्रन्थों के अध्ययन के उपरान्त यह स्पष्ट हो जाता है कि उनपर विशिष्टाद्वैतवादी दर्शन का प्रभाव है जिसके कारण जीव को ब्रहम का अन्श मानते हुए भी माया के प्रभाव से उन्होंने उसको भिन्न मान लिया है। इस दर्शन के अनुसार जीव ससार मे आकर विषय–वासनाओं के आकर्षण में बँधकर अपने ब्रहम रूप को विस्मृत कर देता है। पर जैसे ही उसे ज्ञान प्राप्त होता है, सांसांरिक विषय–भोग से विरक्त हो पर परमात्मा के साक्षात्कार हेतु व्याकुलता का अनुभव करने लगता है। उसकी आत्मा ब्रहम के साक्षात्कार और मिलन के लिए भक्ति का आश्रय लेती है और निरन्तर उसके चिन्तन– मनन, गुण–कथन,स्मरण के द्वारा प्रियतम ब्रहम के समीप आने लगती है। अन्त में भक्ति के द्वारा ब्रहम (कृष्ण) का अनुग्रह प्राप्त कर जीवात्मा मुक्त हो जाती है। वह सदा के लिए कृष्ण में समाहित हो जाती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सूरदासः सूरसागर
2. आचार्य रामचन्द शुक्लः हिन्दी साहित्य का इतिहास
3. डॉ0 माधवीलता शुक्लाः माधव गीता
4. डॉ0 माधवीलता शुक्लाः माधव–माधवी
5. डॉ0 माधवीलता शुक्लाः श्री राधे
6. डॉ0 माधवीलता शुक्लाः प्रणव–प्रिय
7. डॉ0 माधवीलता शुक्लाः छम–छम बाजे पैजनीं